International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 01-08-2019; Accepted: 02-09-2019; Published: 10-10-2019
Volume 1; Issue 2; 2019; Page No. 01-02

तुलसी की गीतावली में सामाजिक सरोकार

हरिश्चन्द्र [1], श्यामसनेही लाल शर्मा [2]

[1] शोधार्थी हिन्दी, हिन्दी–विभाग कुसुम बाई जैन कन्या महाविद्यालय भिण्ड, मध्य प्रदेश, भारत

[2] प्राध्यापक, हिन्दी–विभाग कुसुम बाई जैन कन्या महाविद्यालय भिण्ड, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति परम्परा के कवि है उनके समय में समाज में अनेक प्रकार की बुराइयॉ तथा कुरीतियॉ फैली हुई थी लोग आपस में लड़ते–झगड़ते रहते, चारो तरफ अशान्ति ही अशान्ति फैली हुई। तुलसीदास ने एक आदर्श समाज के निर्माण के लिए रामचरित मानस तथा गीतावली जैसे ग्रन्थों की रचना की जिसमें उन्होंने राजा का प्रजा के प्रति, प्रजा का राजा के प्रति, व्यक्ति का समाज के प्रति तथा परिवार में एक दूसरे के प्रति कर्तव्यबोध का वर्णन करके एक आदर्श समाज की परिकल्पना की।

मनुष्य में समुदाय की भावना का विकास सर्वप्रथम समाज के रुप में हुआ। मानव अपने घुमक्कड़ (आरम्भ में समाज का विकास न होने के कारण) स्वभाव से ऊबकर, उसमें जो साथ–साथ रहने की प्रवृत्ति जगी उसी ने धीरे–धीरे समाज का रुप धारण कर लिया। मनुष्य अपने परिवर्तनकारी स्वभाव के कारण इसमें परिवर्तन करता गया। आज का समाज उसी परिवर्तनकारी प्रवृत्ति का परिणाम है।

'अज्' धातु में 'सम' और 'उत' उपसर्ग तथा 'घञ्' प्रत्यय के योग से समाज शब्द की उत्पत्ति हुई जिसका अर्थ है–समुदाय। 'काशिका वृत्ति' में समाज शब्द की व्युत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है। वहॉ पर पशु समुदाय के लिए 'समजः' शब्द का प्रयोग किया गया है जो 'अज्' धातु में 'सम्' 'उत' उपसर्ग और 'अप्' प्रत्यय के योग से बना है[1] और मानव समुदाय के लिए 'समाज' शब्द का प्रयोग है।[2] मनुष्य समुदाय के लिए प्रयुक्त 'समाज' शब्द के निर्माण में 'घञ्' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। 'घञ्' प्रत्यय का योग भावे सूत्र विधान से है, इस सूत्र से वृद्धि होकर समाज शब्द बनता है।

समाज की मूल अवधारणा का रहस्य एवं संश्लिष्ट स्पष्टीकरण समाजशास्त्रीय ग्रन्थों में मिलता है। समाजशास्त्र मानव व्यवहार की वह शाखा है जो व्यक्तियों के सामाजिक सम्बन्धों तथा व्यक्तियों और समुदाय के परस्पर सम्पर्क एवं प्रभाव प्रक्रिया के कारण कार्य का संधान करती है। आधुनिक समाजशास्त्री मैकाइवर और पेज ने समाज के रूप का वर्णन इस प्रकार किया है– 'समाज रीतियों एवं कार्य प्रणालियों की सत्ता एवं परस्पर सहयोग की अनेक समूहों एवं विभागों की मानव व्यवहार के नियन्त्रणों तथा स्वतंत्राओं की एक व्यवस्था है, इस निरन्तर परिवर्तनशील एवं जटिल व्यवस्था को हम समाज कहते हैं, यह सामाजिक सम्बन्धों का जाल है जो सदैव परिवर्तित होता रहता है।''[3] इसी प्रकार हिन्दी के विद्वान डा0 नागेन्द्र ने भी समाज को परिभाषित किया है– ''समाज से अभिप्राय सामुदायिक जीवन की ऐसी अनवरत एवं नियामक व्यवस्था से है, जिसका निर्माण व्यक्ति पारस्परिक हित तथा सुरक्षा के निमित्त जाने–अनजाने कर लेता है।''[4]

गीतावली गोस्वामी तुलसीदास विरचित एक अद्वितीय कृति है। इसमें सात काण्ड और 328 पद हैं। यह कृत रामचरित मानस के प्रसंगों का विस्तार देने वाली नवीन उद्भावनाओं से पूर्ण है। सांस्कृतिक विकास एवं स्थान भेद के कारण गीतावली में तीन प्रकार के समाजों का वर्णन है– 1. नगरी समाज 2. ग्रामीण समाज 3. वनवासी समाज (वन में रहने वालों का समाज) इन तीनों ही समाज का वर्णन राम कथा के सन्दर्भ में किया गया है।

गीतावली में नगर समाज का बड़ा ही रोचक एवं व्यापक वर्णन तुलसीदास द्वारा 'रामराज्य' के सन्दर्भ में किया गया है। 'रामराज्य' में सर्वत्र आनन्द ही आनन्द था सब लोग आनन्द का उपभोग कर जीवन यापन कर रहे थे। लोगों में सब प्रकार के ईर्श्या, कपट, क्लेश, पाप, कुमार्ग, कुसंग, कुलक्षण और कुचाह नष्ट हो गये थे तथा दरिद्रता, दम्भ, दारुण, दुकाल और दोष का नाम ही मिट गया। पृथ्वी कामधेनु रूपा हो गई और वृक्ष साक्षात् कल्पतरु हो गये। रामराज्य में सारे पुरुष और स्त्री पुण्यवान और भाग्यशाली थे, वे अपने अपने वर्णाश्रम धर्मों में तत्पर मन, बचन और वेष से हंस के समान स्वच्छ पवित्र, राम और सीता के सेवक, प्रेमी, साधु चरित्र, प्रसन्नवदन एवं विनम्र थे।[5]

> 'ज्यों हुलास रनिवास नरेसहिं, त्यों जनपद राजधानी।'
> गीतावली (बालकाण्ड)4/3

चूँकि ग्रामीण समाज का सम्बन्ध राजपरिवार से था। इसलिए उसके सुख–दुःख का सम्बन्ध राजपरिवार के सुख–दुःख से भी सम्बन्धित था। रामादि के जन्मोत्सव एवं राज्याभिषेक के प्रसंग में नगर के समाज के साथ गांव का समाज भी आनन्दित होता है, पर जब राम वन को जाते है तो नगर समाज की भॉति गांव का समाज भी दुःखी होता है। तुलसी जी ने ग्रामीण समाज की भावनाओं का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है। राम वन गमन के अवसर पर नगर समाज की भॉति ग्रामीण समाज की प्रतिक्रिया निम्नवत है–

> कैसे पितु मातु, कैसे प्रिय परिजन हैं ?
> जग जलधि ललाम, लोने–लोने गोरे ष्याम
> जिन पठाए हैं ऐसे बालकनि वन हैं।[6]

गीतावली में वन समाज को दो वर्गों में बॉटा गया है– ऋषि–मुनि समाज और वनवासी समाज। एक ही स्थान विषेष में रहने पर भी इनके रहन–सहन, खान–पान, वेष–भूषा एवं जीवनदर्षन में पर्याप्त भेद था। ऋषि मुनियों के आश्रम नदियों एवं तड़ागों के किनारे जंगल में रहते थे। इस वर्ग का समाज में बड़ा आदर था। ऋषि विष्वामित्र जब राम लक्ष्मण के साथ जनकपुर में प्रवेष करते है, तो महाराज जनक स्वयं अपने कुलगुरू एवं विप्र समाज सहित उनका स्वागत एवं सम्मान करते हैं।

वनवासी समाज के अन्तर्गत वानर ऋक्ष आदि जातियॉ आती है ये जातियॉ आर्य जातियों से प्रभावित थी। इन्होंने राम की सब प्रकार से सेवा एवं सहायत की। ये लोग अलग–अलग समाज से सम्बन्धित थे प्रत्येक समाज का प्रतिनिधित्वकर्ता उन्हीं के बीच का राजा होता था। ये लोग सभ्यता के केन्द्र से दूर होते हुए भी इनके अन्दर अच्छाइयॉ और आदर्ष के प्रति प्रेम था, लेकिन इनकी जीवन पद्धति ने इस गुणों के विकास के लिए कोई अवसर प्रदान नहीं किया।

गीतावली में मानव समाज के अतिरिक्त देव समाज और राक्षस समाज का भी वर्णन हुआ है जो कथा प्रवाह की अनिवार्यता के रूप में है। देव और राक्षसों के उन्हीं कर्मो का दिग्दर्षन गीतावली में कराया गया है जिसका मानस में विस्तार से वर्णन किया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. ''समुदोरजः पषुषु''–काषिकावृत्ति, 3/3/69
2. ''समाजो ब्राह्मणोनाम समजः पषुनाम्'' 3/3/69
3. समाजशास्त्रः अवधारणा एवं सिद्धान्त, पृ0–78, मैकाइबर और चार्ल्स।
4. साहित्य का समाजषास्त्र, पृ0–6, डॉ नगेन्द्र
5. गीतावली, (उत्तर0) पद–1
6. गीतावली, (अयोध्या0) पद–26/1